विचार बिन्दु

शरीर को रोगी और निर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।
–लोकमान्य तिलक

निरोगी आयु के आयुर्वेदिक सूत्र

आइये एक बार स्वस्थ जीवन पर समग्र दृष्टि डालें। जीवन में हर व्यक्ति टूट-फूट की प्रक्रिया से गुजरता है। असली बुढ़ापा 60-70 वर्षों के बाद आता है, परन्तु आज लोग समय से पहले ही बूढ़े हो रहे हैं। कारण हमारी जीवन शैली में स्पष्ट है! हम सात में से उन छह किलेबंदियों या दीवारों को तोड़ रहे हैं जो हमारे स्वास्थ्य और रुग्णता के बीच मौजूद हैं। ये सात दीवारें आहार, विहार या जीवनशैली, स्वस्थवृत्तया व्यक्तिगत स्वास्थ्य से जुड़े आचरण या व्यक्तिगत सदाचरण, रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें और औषधि या चिकित्सा हैं।

जब हम पहली छह दीवारों को टूटने देते हैं, जैसा कि हम प्राय: करते हैं, तो हमारे विकल्प सीमित हो जाते हैं। हमारा जीवन सीधा दवाओं के भरोसे हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम मरीज के रूप में उनके रेवेन्यू-जनरेटर हो जाते हैं जिनके लिये हेल्थकेयर अब दुधारू उद्योग बन गया है। अगर दवा विफल हुई तो हमारा काम-तमाम हो जाता है।

चरक संहिता में दो रोचक सूत्र हैं जो बड़े सरल और सहज महसूस होते हैं। फिर भी, इनमें आने वाली प्रत्येक सलाह और संबंधित सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्रिकाओं में, आयुर्वेद का नाम लिये बिना, लगभग पांच लाख शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन शोधपत्रों में आयुर्वेद शब्द का नाम भले न लिया गया हो पर ये सभी शोधपत्र आयुर्वेद की 5000 साल पुरानी सलाह या निष्कर्षों का समर्थन करते हैं।

दरअसल तीन कारक हैं जो सभी बीमारियों को जन्म देते हैं–जीवन में हमारे द्वारा की जाने वाली बौद्धिक त्रुटियां, इन्द्रियों का असंतुलित उपयोग और समय का प्रभाव-ये तीनों सभी प्रकार के विकारों का कारण हैं। यदि हम त्रुटियाँ न करें, बुद्धि, इंद्रियों और समय का संतुलित उपयोग करें तो बीमारी से बचाव संभव है। आयुर्वेद किसी अन्य चिकित्सा प्रणाली की तुलना में अच्छे स्वास्थ्य को अधिक व्यापक और समग्र रूप से परिभाषित करता है। लगभग 1200 ईसा पूर्व से 600 ई.पू. के दौरान आचार्यसुश्रुत, जो दुनिया के पहले सर्जन और संत-वैज्ञानिक के रूप में प्रतिष्ठापित हैं, ने त्रिदोष (मूल सिद्धांत जो शरीर की फिजियोलोजी को सम्हालते हैं), अग्नि (चयापचय और पाचन तंत्र), धातुयें (शरीर के ऊतक), मलक्रिया (अपशिष्ट उत्पादों का उत्सर्जन) बराबर काम करते हैं, और आत्मा, मन और इन्द्रियाँ प्रसन्न रहती हैं, तो हम मान सकते हैं कि हम स्वस्थ हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो शरीर, मन और आत्मा का सुसंगत संतुलन ही स्वास्थ्य है।

एक मूल प्रश्न है कि मान लें कि हम सभी ईमानदारी से बेहतर उम्र चाहते हैं और पृथ्वी पर हमारे कार्यकाल के आखिरी दिन तक स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो क्या करना चाहिये? दूसरे शब्दों में, हमारी जीवन-शैली, खान-पान, रहन-सहन कैसा हो कि हम सदैव स्वस्थ व्यक्ति की श्रेणी में गिने जायें? यह प्रश्न हमें पुन: उन सात दिग्गज दीवारों की मरम्मत और प्रबंधन करने के लिये वापस ले जाता है। सदा निरोगी रहने के लिये आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से निरंतर परामर्श करने की जरूरत है, फिर भी कुछ सामान्य सबक लेने लायक हैं।

आयुर्वेद वैयक्तिक चिकित्सा का जनक है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्रकृति (वात, पित्त, कफ) और सत्त्व (सत्त्व, रजस, तमस प्रवृत्ति की वर्तमान स्थिति) तथा साथ शरीर बल (जीवन शक्ति) और कई अन्य प्रासंगिक कारकों का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होता है। बढ़ती आयु से संबंधित रोगजनन को रोकने के लिये कुछ सामान्य निर्देशों का पालन उपयोगी है। उपयुक्त आहार, विहार (जीवनशैली, व्यायाम, नींद इत्यादि), (व्यक्तिगत आचरण का कोड), स्वस्थ्यवृत (व्यक्तिगत स्वास्थ्य का कोड), रसायन (वय:स्थापक और कायाकल्प), पंचकर्म (शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें) और औषधि (चिकित्सा) को न अपनाने के कारण हम तमाम रोगों की समस्या भुगतते हैं।

आहार या भोजन और पेय पदार्थ के संबंध में एक सलाह यह है कि हमारे कुल आहार का एक तिहाई फलों के रूप में होना चाहिये। सभी फलों को भोजन के आरंभ में खाया जाना चाहिए, भोजन के तुरंत बाद नहीं। फल भी विविध प्रकार के, विविध रंगों वाले, व बहुत खट्टे नहीं होना चाहिये। केवल एक ही प्रकार का फल भी सदैव नहीं होना चाहिये, हालांकि अनार, मुनक्का और आमला सदैव खाये जा सकते हैं। आयुर्वेदिक खाद्य पदार्थों में से कई बहुआयामी हैं: उदाहरण के लिए खजूर, अंगूर, किशमिश, बादाम, तिल, आमलकी, लहसुन, अदरक, काली मिर्च, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, शहद, गाय का दूध, गाय का घी, गुड़ और त्रिफला आदि। यदि इन्हें उचित तरीके से लिया जाता है, तो वे फ्री-रेडिकल्स की सफाई और ऑक्सीडेटिव-तनाव में कमी में लाने में सहायता करते हैं। ये दर्द को कम करते हैं। ये भोजन, रसायन और औषधि सब कुछ एक में हैं। ये सुपर-फ़ूड हैं तथा स्वास्थ्यकर हैं।

रसायन भी आयुर्वेद के चमत्कार हैं जो दीर्घायु, स्मृति, बुद्धिमत्ता, बीमारी से लड़ने की क्षमता, शरीर की चमक, रंग और आवाज, शक्ति, वाणी आदि तमाम लाभ प्रदान करते हैं। रसायन शरीर की कोशिकाऐं और ऊतकों को उत्कृष्ट स्थिति में रखते हैं। रसायन आज तक ज्ञात सर्वोत्तम और सुरक्षित एंटीऑक्सीडेंट हैं।

भोजन तब ही लिया जाना चाहिये जब भूख लगी हो अर्थात जब पहले खाया हुआ खाना पूरी तरह से पच गया हो। चाय यदि छोड़ नहीं सकें तो कम तो कर ही देना चाहिये। चाय की बजाय फलों का रस, आयुर्वेदिक क्वाथ या जड़ी-बूटियों का काढ़ा दिन में दो-तीन बार लिया जा सकता है। छाछ सबसे अच्छा पेय होता है, जिसे जीरा, कालीमिर्च और थोड़े से सैन्धव नमक के साथ लिया जाना चाहिये। बाकी सब नमक छोड़कर सैन्धव नमक का उपयोग करना चाहिये।

खाने में सभी स्वाद या रस (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय) खायें। भोजन की शुरुआत हमेशा मधुर रस से और अंत हमेशा कटु, तिक्त व कषाय रस के साथ होना चाहिये। यदि आपके पास अंत में खाने के लिये कटु, तिक्त या कषाय रस नहीं बचा तो एक चुटकी काली मिर्च से भोजन समाप्त करना अच्छा विकल्प है।

भोजन कितना खायें? यह आपके पेट की अग्नि-क्षमता पर निर्भर करता है। लेकिन याद रखें कि पेट के एक तिहाई हिस्से में ठोस भोजन, एक तिहाई में तरल पदार्थ, और पेट के शेष तीसरे भाग को पाचन-क्रिया के कुशलतापूर्वक संपन्न होने के लिये खाली छोड़ देना चाहिये।

निद्रा अच्छे स्वास्थ्य के तीन स्तंभों में से एक है, और यह स्वास्थ्य को बनाये रखने और बढ़ती उम्र के कारण होने वाले रोगों को रोकने में महत्वपूर्ण है। दरअसल, सुख और दुख, पोषण और कुपोषण, शक्ति और कमजोरी, उर्वरता और बांझपन, ज्ञान और अज्ञान, जीवन और मृत्यु सब उचित नींद पर निर्भर करते हैं। अत्यधिक नींद या नींद का अभाव खुशी और दीर्घायु दोनों को छीन लेते हैं। उचित मात्रा में नींद खुशी और दीर्घायु प्रदान करती है। रात के दौरान न्यूनतम 7 घंटे नींद लें। लेकिन 8 घंटे से अधिक समय तक नहीं सोना चाहिये। दिन के दौरान सोना हानिकारक है। किसी कारण से थक जाने या बीमार होने पर दिन में सोया जा सकता है।

स्वस्थ आयु के लिये आयुर्वेद स्वयं की देखभाल करने हेतु दिनचर्या सुझाता है। इनमें सुबह जागने, मल-विसर्जन, स्वच्छता, अभ्यंग, खान-पान, रहन-सहन, आवाजाही, उठना-बैठना आदि शामिल हैं। सोना, जागना, मुंह, दांतों, आँखों, नाक, कान और त्वचा की देखभाल, सफाई प्रक्रिया, योग आदि भी इसी चर्या के अंग हैं। ये सभी दिन, रात और मौसम (दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या) के अनुसार सर्कैडियन रिद्म के साथ तारतम्य बनाते हुये उम्र-आधारित रोगजनन को रोके रहते हैं। उदाहरण के लिये हल्के गुनगुने महानारायण तेल से नियमित अभ्यंग अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने और बढ़ती उम्र के साथ होने वाले रोग परिवर्तनों को विलंबित करने में फायदेमंद होगा। अभ्यंग को नियमित रूप से दैनिक या कम से कम साप्ताहिक जीवनशैली में शामिल किया जा सकता है क्योंकि यह दोषों के संतुलन को पुनर्स्थापित करते हुये कल्याणकारी दीर्घायु प्रदान करता है। प्रत्येक सुबह अणु तेल की कुछ बूंदों से प्रतिमर्शनस्य उपयोगी है। नस्य के लिये घी या तिल तेल भी उपयोगी होते हैं। यह वायरल संक्रमण को दूर रखने में सक्षम बनाता है और स्वास्थ्य के अनेक लाभ देता है।

हमें योग-आसन, प्राणायाम और ध्यान-में भी प्रतिदिन निवेश करना चाहिये। सप्ताह में कम से कम 150 मिनट व्यायाम में भी निवेश करना चाहिये। व्यायाम हमेशा अपनी शक्ति या बल के आधे तक या व्यक्तिगत क्षमता के आधे तक करना चाहिये, ज़्यादा नहीं। व्यायाम बहुत थकावट के स्तर तक नहीं करना चाहिये। जैविक घड़ी और सर्कैडियन लय-ताल के अनुसार दिनचर्या स्वास्थ्य के लिये बहुत प्रभावी है। असल में यह पूरी कवायद उम्र बढ़ने के साथ रोगजनन को रोकती है और प्रमाण-आधारित है। दिनचर्या की अक्षुण्णता दीर्घायु और स्वास्थ्य प्रदान करती है। साथ ही सर्कैडियन लय में गड़बड़ी के कारण थकान, भटकाव, अनिद्रा और कई बीमारियों के लिये बढ़ते जोखिम को कम कर सकती है। योग और व्यायाम भी संतुलन बहाल करते हैं।

ऊतकों या धातुओं के पोषण व शक्ति के लिये पंचकर्म या शुद्धि और कायाकल्प बहुत उपयोगी है। उम्र-संबंधी रोगजनन को रोकने में भी बहुत उपयोगी है। इसी तरह रसायन भी आयुर्वेद के चमत्कार हैं जो दीर्घायु, स्मृति, बुद्धिमत्ता, बीमारी से लड़ने की क्षमता, शरीर की चमक, रंग और आवाज, शक्ति, वाणी आदि तमाम लाभ प्रदान करते हैं। रसायन शरीर की कोशिकों और ऊतकों को उत्कृष्ट स्थिति में रखते हैं। रसायन आज तक ज्ञात सर्वोत्तम और सुरक्षित एंटीऑक्सीडेंट हैं।

यहां दिये गये सुझाव बहुत संक्षेप में है। पर शुरुआत करने के लिये पर्याप्त हैं। विशेषज्ञ आयुर्वेदाचार्य के पर्यवेक्षण और सलाह में इनका उपयोग करना उत्तम स्वास्थ्य की दिशा में बड़ी शुरुआत होगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

दुर्गाष्टमी पर पांच लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किये मां कैलादेवी के दर्शन

कैलादेवी/करौली, (नि.सं.)। प्रसिद्ध कैलादेवी आस्थाधाम में राज राजेश्वरी मां कैलादेवी के चल रहे सत्रह दिवसीय लक्खी जात चैत्र मेले में शनिवार को दुर्गाष्टमी पर पांच लाख से अधिक भक्तों ने मां कैला देवी के दर्शन किए।

गत 14 मार्च को शुरू हुए कैलादेवी जी के लक्खी जात चैत्र मेले के शुभारम्भ में लाखों पदयात्रियों ने मां के दर्शन किये। इसके बाद मेले के बीच में पड़ने वाली अमावस्या के अगले दिन नवसंवत्सर पर लाखों यात्रियों ने मां के धनलक्ष्मी के रूप में दर्शन लाभ लिये। इसके उपरान्त अब मेले के दूसरे दौर में शनिवार को दुर्गाष्टमी के अवसर पर लगभग पांच लाख से अधिक यात्रियों ने दर्शन लाभ लिये। दुर्गाष्टमी के अवसर पर एक दिन पूर्व देर रात मां कैलादेवी का मंदिर चौक यात्रियों से ठसाठस भर गया एवं कैला ग्राम में जहां देखें वहीं यात्रियों का सैलाब दिखाई दिया। पूरा कस्बा मां के लांगुरिया गीतों से गूंज उठा। महिला यात्रियों ने लांगुरिया गीतों पर जमकर नृत्य किये।

कैला माता के मंदिर में चल रहे नवरात्र मेले के दौरान मंदिर ट्रस्ट के सोल ट्रस्टी कृष्णचन्द्र पाल, पुत्र विवश्वत पाल, ट्रस्ट प्रबंधक महेश शर्मा माता के दर्शन कर लौटते हुए।

- अब तक 38 लाख श्रद्धालु कर चुके हैं माता के दर्शन
- महिला श्रद्धालुओं ने लांगुरिया गीतों पर किया नृत्य
- पुलिस व आरएसी ने मशक्कत कर व्यवस्था बनाई

शनिवार को दुर्गाअष्टमी के अवसर पर मां के दर्शनों को प्रात: 2 बजे से ही लम्बी कतार लग गई। प्रात: 4 बजे मां के मंदिर के पट खुलने पर यात्रियों की दर्शनों को भारी भीड़ उमड़ी। इस अवसर पर कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट के सोल ट्रस्टी व पूर्व नरेश कृष्णचन्द्र पाल उनके पुत्र विवश्वत पाल ने दोपहर 11 बजे विधि-विधान से मां की पूजा अर्चना कर मां कैला की महाआरती की। ट्रस्ट प्रबन्धक महेश शर्मा ने बताया कि दुर्गाष्टमी के अवसर पर लगभग पांच लाख से अधिक भक्तों के दर्शन लाभ लेने पर दुर्गाष्टमी तक यात्रियों की कुल संख्या 38 लाख से अधिक पहुंच चुकी है। उन्होंने बताया कि अभी पूर्णिमा तक यात्रियों की भारी आवक रहेगी। मेले के दौरान अष्टमी पर उमड़ी भीड़ को नियंत्रण में रखने के लिये जिला पुलिस, आरएसी के जवान व महिला पुलिसकर्मियों को मंदिर में भारी मशक्कत करनी पड़ी। पूरे कैलादेवी कस्बे में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश यादव, वृत्ताधिकारी कैलादेवी सुरेन्द्र कुमार दानोदिया, थानाधिकारी गिरधारीलाल ने अलग-अलग टीमों के साथ असामाजिक तत्वों पर नजर रखी वहीं मुख्य मार्गों में गश्त करते नजर आये।

'फॉर्म-पॉण्ड किसानों की आजीविका के मज़बूत आधार'

जयपुर, (कासं)। राजस्थान सरकार द्वारा किसानों के कल्याण के लिए संचालित की जा रही योजनाओं में मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना कारगर साबित हुई हैं। सीएम जल स्वावलम्बन अभियान के अतर्गत बने फॉर्म-पॉण्ड किसानों की आजीविका के मज़बूत आधार के रूप में उभरे हैं ये कहना है अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय का। ये फार्म पाण्ड फसलों की औसत उपज बढ़ाने व भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में भी कारगर साबित हुए हैं।

- एक सिंचाई से औसत उपज 50 से 125 प्रतिशत तक बढ़ जाती है
- किसान इंजन और पाइप से खेतों तक पानी की पहुंच बना लेते हैं

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत बने फॉर्म-पॉण्ड किसानों की फसल बढ़ाने में कारगर साबित हुए हैं।

खेतों में बनी छोटी तलाई से भू-जल रिचार्ज, फसलों के उत्पादन में बढ़त, खेती के रकबे में बढ़त होती है साथ ही मवेशियों को चारा और पानी मिल पाता है। वन विभाग द्वारा कराये गये जल और मृदा संरक्षण कार्यों के मूल्यांकन व वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि एक सिचाई से फसल की औसत उपज 50 से125 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। और किसान को इससे 3000 से 6000 रुपये तक अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।पहले वर्षा का पानी खेत के बाहर बहकर बर्बाद हो जाता था अब खेत में बना छोटा सा तालाब किसानों के लिये बड़ी संपत्ति साबित हो रहा है। इस पानी को जरूरत पडते ही किसान जुगाड़ कर इंजन और पाइप से खेतों तक पानी की पहुँच बना लेते हैं। कई गावों में किसान का जुगाड़ को किराये पर लेना आजीविका का साधन बन गया है। साल में 10-15 दिन होने वाली अच्छी बरसात से करीब दो हेक्टेयर क्षेत्र में सिचाई की जा सकती है। फॉर्म-पॉण्ड की गाद और मिट्टी भी खाद का काम करती है जिससे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है।

ज़नवाणी

देश में चहुंओर अधर्म का साम्राज्य फैलता जा रहा है

दुर्भाग्य से इस वक्त भारत जैसे धर्मात्मा लोगों के देश में चहुंओर अधर्म का साम्राज्य फैलता जा रहा है जो देश के कर्णधारों के लिए घोर चिंतन का विषय है।

पिछले कई वर्षों से देश के राजनेताओं एवं सरकार के बड़े अधिकारियों, अफसरों आदि में भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, वायदा खिलाफी एवं अभिमानपूर्वक स्वयं को जनता जनार्दन से श्रेष्ठ समझना जैसे दुगुर्णों में बढ़ोतरी होती जा रही है। व्यापारी वर्ग में ज्यादा मुनाफाखोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी एवं मिलावटखोरी जैसी अनैतिक आदतों में वृद्धि होने से देश के करोड़ों गरीब लोगों को भारी मुसीबतें झेलनी पड़ रही है।

पिछले कुछ वर्षों से देश में दो व्यापार नये उभरे हैं, वो हैं चिकित्सा और शिक्षा व्यवसाय। कोई जमाने में ये दोनों कार्यों को सेवाभाव से किया जाता था लेकिन खेद है कि वर्तमान में इन दोनों कार्यों में ही जमकर लूट-खसोट बेशर्मी से निरन्तर जारी है। सरकार का इन पर जरा भी अंकुश नजर नहीं आता।

देश में कलयुग का प्रभाव है या कुछ और, लोगों का नैतिक-चारित्रिक हनन बड़ी तेजी से होता जा रहा है। वर्तमान समय से कहीं बहुत अच्छा समय तो परतंत्र में ही था। ये अपने बुरी तरह भारत को लूटे जा रहे हैं।

–नेमीचन्द छाबड़ा, जयपुर (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

दक्कन क्रॉनिकल से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 25 मार्च, 2018

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2075, आर्द्रा नक्षत्र, शोभन योग, बव करण, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–धनु, बुध–मीन, गुरू–तुला, शुक्र–मीन, शनि–धनु, राहु–कर्क, केतु–मकर राशि में।

आज आर्द्रा नक्षत्र दिन 2:21 तक, शोभन योग रात्रि 12:02 तक है। इसके पश्चात पुनर्वसु नक्षत्र, अतिगंड योग, बालव करण आरम्भ होगा।

आज रवियोग दिन 2:21 से आरम्भ होगा। आज रामनवमी है और बसन्त नवरात्रा समाप्त होंगे।

आज नवमी तिथि का क्षय हुआ है और मेला रामनवमी का है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:0 से 9:31 तक, लाभ-अमृत 9:31 से 12:33 तक, शुभ 2:04 से 3:35 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष
घर-परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। मन:स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

कन्या
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी और धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च होगा।

धनु
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। घर-परिवार में धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मीन
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।